Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 20-02-2024, Accepted: 14-03-2024, Published: 04-04-2024
Volume 5, Issue 1, 2024, Page No. 5-6

महादेवी वर्मा की कविता में गीति–तत्त्व

सुरेन्द्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पंडित सुंदरलाल (पोस्ट ग्रेजुएट) कॉलेज कन्नौज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
महादेवी वर्मा छायावाद के चार आधार–स्तम्भों में से एक हैं। महादेवी की कविताओं में कुछ ऐसी विशेषताएँ मिलती हैं कि जिसे छायावाद के किसी अन्य कवि में समाहित नहीं किया जा सकता। कल्पना–विधन, शब्द–रचना, प्रतीकात्मकता और शदों की विलोमात्मक संगति उनमें विशेष रूप से दिखायी देती है। इसके साथ ही तरलता, सहजता और तन्मयता जैसे गुण उनकी कविताओं के विशेष पहचान बन जाते हैं। नारी होने के कारण महादेवी वर्मा की लेखनी स्वाभाविक रूप से गीतिकाव्यात्मक है,क्योंकि महादेवी ने स्वयं अपने जीवन में सुख और दुख रूपी धूप–छाया को बहुत करीब से देखा और महसूस किया है। अतः उनके सुख और दुख के अनुभवों से उनकी लेखनी ने न जाने कितने गीतों को जन्म दिया। स्पष्ट है कि महादेवी की कविताएँ और उनमें विद्यमान उनका गीति–तत्व इन सारे नियमें का वहन करता है तभी तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सरीखे आलोचक ने भी लिखा है–"गीत लिखने में जैसी सफलता महादेवी जी को हुई, वैसी और किसी की नहीं। न तो भाषा का स्निग्ध और प्रांजल–प्रवाह और कहीं मिलता है, न हृदय की ऐसी भाव–भंगिमा। जगह–जगह ऐसी ढली हुई और अनूठी व्यंजना से भरी पदावली मिलती है कि हृदय खिल उठता है।"[7]

मूल शब्दः चतुष्टय, दुखात्मक अनुभूति, पद–संगति, सहजानुभूति और सौन्दर्य चेतना, आत्माभिव्यंजना जललात, सन्दर्भ

महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व वह क्षितिज है जहॉ पर उनके काव्य का आकाश और उस काव्य में व्याप्त गीतों की जमीन का संसार एक–दूसरे को छूते से प्रतीत होते हैं। महादेवी वर्मा छायावाद के चार आधार–स्तम्भों में से एक हैं। छायावादी चतुष्टय के प्रत्येक कलाकार में गीति–प्रतिभा की कुछ अलग–अलग विशेषताएँ हैं, क्योंकि इन सभी कवियों ने अपने व्यक्तित्व की कुछ निजी जटिलताएँ हैं। जहॉ प्रसाद ने अपने काव्य को गीतिमत्ता से भर दिया है वहीं निराला ने अपने गीतों में भी महाकाव्यात्मकता को उतार दिया है। किन्तु पन्त और महादेवी गीतिकाव्य की आत्मा की रक्षा कर लेते हैं। ये दोनों गीत की मधुरता, संगीतात्मकता, नाद–सौन्दर्य एवं अन्य अपेक्षित तत्वों का निर्वाह करते हुए गीतिकाव्य के आदर्ष एवं विधन का निर्वाह करते दिखायी पडते हैं।

महादेवी की कविताओं में कुछ ऐसी विशेषताएँ मिलती हैं कि जिसे छायावाद के किसी अन्य कवि में समाहित नहीं किया जा सकता। कल्पना–विधन, शब्द–रचना, प्रतीकात्मकता और शब्दों की विलोमात्मक संगति उनमें विशेष रूप से दिखायी देती है। इसके साथ ही तरलता, सहजता और तन्मयता जैसे गुण उनकी कविताओं के विशेष पहचान बन जाते हैं। जबकि गीत में किसी एक विचार, भाव या घटना का चित्राण तन्मयता के साथ किया जाता है। गीत की रचना गेय पदों में होती है तथा उसमें भाषा की सुकुमारता विद्यमान रहती है। गीतों में प्रायः वैयक्तिक अनुभूतियॉ अर्थात आत्माभिव्यक्ति रहती है। वेदना एवं उल्लास के अतिरेक से मानव–हृदय स्पन्दित होकर जो स्वर–विधन करता है वह काव्य "गीति–काव्य" की संज्ञा से विभूषित होता है। रस्किन के अनुसार– "गीति काव्य कवि की निजी भावनाओं का प्रकाष होता है।" ब्रूनतेयर भी इसी को और स्पष्ट तौर पर कहते हैं "गीतिकाव्य में कवि भावनुकूल लयों में अपनी आत्मनिष्ठ वैयक्तिक भावना व्यक्त करता है। भावनाओं की तीव्रता गीत का अन्यतम गुण है जिसे भाव–प्रवणता कहते हैं।"[1]

मनुष्य जब सुख और दुख की अवस्था में, आनन्द और विषाद के क्षणों में अपने मुख से जो "स्वर–लहरी" उत्पन्न करता है उसे ही "गीत" कहा जाता है। अतः गीतिकाव्य या गीत मनुष्य को दुख और सुख के समय में ऐसी षक्ति प्रदान करता है कि वह अन्य मनुष्यों को अपना हिस्सेदार बनाकर हलका हो जाता है। महादेवी वर्मा ने लिखा है–

"साधारणतः गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख–दुखात्मक अनुभूति का वह शब्द रूप है, जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके।"[2]

नारी होने के कारण महादेवी वर्मा की लेखनी स्वाभाविक रूप से गीतिकाव्यात्मक है,क्योंकि महादेवी ने स्वयं अपने जीवन में सुख और दुख रूपी धूप–छाया को बहुत करीब से देखा और महसूस किया है। अतः उनके सुख और दुख के अनुभवों से उनकी लेखनी ने न जाने कितने गीतों को जन्म दिया। महादेवी की प्रतिभा नारी–सुलाभ सहजता के साथ गीति–मूलक है। गीतिकाव्य की सफल रचना के लिए जिन तत्वों की आवष्यकता होती है, वे मुख्यतः इस प्रकार हैं वैयक्तिकता की अधिकता, संकेत की प्रधानता, संगीतात्मकता या गेयता, चित्रा–कल्पना, प्रभावान्विति, पद–संगति, सहजानुभूति और सौन्दर्य चेतना।

महादेवी कही कविता में गीतिकाव्य की सभी विशेषताएँ उपलब्ध होती हैं उन्होंने अपने हृदय की संचित अनुभूतियों को ही गीत के रूप में उतारा है। अपने सुख–दुख एवं हर्ष–विशाद को ही वे अपने काव्य का विषय बनाती हैं। उनके गीतों में व्यक्ति एवं जगत का दुख सर्वत्र व्याप्त है। अतः गीतिकाव्य में कवि का व्यक्तित्व प्रत्यक्ष हो उठता है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का भी मत है गीत में ही कवि का व्यक्तित्व पूरी तरह प्रतिबिम्बित होता है। वह कवि की सच्ची आत्माभिव्यंजना होती है। कवि के अंतस्तल का उद्घाटन गीत में ही संभव है। इसी कारण कवयित्री अपने को विरह का "जलजात" बताती हुई कहती है –

> विरह का जलजात, जीवन का जलजात।
> वेदना में जन्म करूणा में मिला आवास।
> अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रात।
> जीवन विरह का जललात।

गीत काव्य में राग तत्व की प्रधानता होती है जिसमें भाव एवं रस का समावेश कल्पना–विधन, शब्द–रचना, प्रतीकात्मकता और शब्दों की विलोमात्मक संगति उनमें विशेष रहता है। इस रागात्मकता से ही गीत में भाव –सम्प्रेशण का गुण आता है और उसे सुनते ही पाठक पर गीत का अद्भुत प्रभाव दिखाई पडता

है। महादेवी के काव्य में यह रागात्मकता विद्यमान है। महादेवी के अनुसार–गीति का चिरन्तर विषय रागात्मिका वृत्ति से सम्बन्ध रखने वाली सुखदुखात्मक अनुभूति ही रहेगी। ये अपने जीवन की तुलना नीर भरी बदली से अत्यन्त रागात्मक भाव से करते हुए वे कहती हैं।

मैं नीर भरी दुख की बदली।
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना।
परिचय इतना इतिहास यही,
उमडी कल थी मिट आज चली।

गेयता गीत का प्राण है। रवीन्द्र–षैली में भी हम इसी गेयता को काव्य –संगीत के रूप में पाते हैं। महादेवी के गीतों में भी गेयता का तत्व विद्यामान है। संगीत की मधुर स्वर लहरियों से ही गीत का माधुर्य बढता है, वही भाव को मुखरित करता है और वही उसमें संगीत की अखण्ड रसधरा प्रवाहित करता है। महादेवी ने छंद और तुक का निर्वाह सर्वत्र किया है। उनके गीतों में नाद सौन्दर्य भी विद्यमान है तथा आकारगत लघुता भी। यथा–

क्या पूजा क्या अर्चन रे।
उस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा लघुतम जीवन रे।
मेरी श्वासें करती रहतीं नित प्रिय का अभिनन्दन रे।
पद रज को धेने उमडे आते लोचन में जलकण रे।

आधुनिक आलोचकों की तरह और नए कवियों की तरह महादेवी ने लिरिक का अंधानुकरण नहीं किया। महादेवी का मानना था कि भारतीय साहित्य में गीति अथवा गेय रचनाओं का प्रारम्भ वैदिक काल में ही हो गया था। कवयित्री ने अपनी इस धारणा को सिद्ध करने के लिए "वेद–गीत" और "काव्य–गीत" के बीच की कडी को जोडते हुए यह कहा है कि– "बौद्ध धर्म जीवन की विषमता से उत्पन्न है अतः दुख–निवृत्ति के अन्व कल्पना–विधन, शब्द–रचना, प्रतीकात्मकता और शब्दों की विलोमात्मक संगति उनमें विषे ाकों के समान वह भव के प्रति अधिक निर्मम रहा पर उसकी विषाल करूणसिक्त पृथ्वी पर जो गीत के फूल खिले,वे जीवन से सुरभित और दुःख के नीहार कणों से बोझिल है। वैयक्तिक रागभरी थेरगाथाएँ अपनी भाषा और भाव के कारण वेद–गीत और काव्य–गीतों की बीच कडी जैसी लगती हैं।
महादेवी वर्मा के गीतों में भावनाओं का सूनापन और शिल्प की सुन्दरता का ऐसा सुन्दर संयोग मिलता है जो उनकी मधुर चिन्तनधारा की गति और लय की एकरसता को बनाए रखता है। यथा–

जाग जाग सुकेषिनी री।
अनिल ने आ मृदुल हौले
शिथिल वेणी– बंध खोले
पर न तेरे पलक डोले
बिखरती अलकें, झरे जावे
सुमन वरवेषिनी री।

कवयित्री ने इन पंक्तियों में भाव और विचार की दृष्टि से मार्मिकता और माधुर्य को जो संयोजन किया है वह अद्भुत है। इसी तरह वे भावनाओं और विचार–चित्रों तथा शिल्प–संघटन का सुन्दर झरोखा प्रस्तुत करते हुए कहती हैं।

घिरती रहे रात!
न पथ रूंधती ये
गहनतम शिलाएँ
न गति रोक पाती
पिघल मिल दिषाएँ
चली मुक्त मैं ज्यों मल की मधुर बात।
घिरती रहे रात!

महादेवी वर्मा के गीतों में ध्वन्यात्मक षब्दों के अनेक सुन्दर प्रयोग मिलते हैं। इस प्रकार के प्रयोग मिलते हैं। इस प्रकार के प्रयोग पंत की कविताओं में भी बहुत अधिक मिलते हैं किन्तु महादेवी के गीतों में केवल वर्णात्मक ध्वनयात्मकता ही नहीं आंतरिक ओर सारगर्भित ध्वन्यात्मकता भी मिलती है। इस तरह कवयित्री ने शब्द, भाव और अर्थ तीनों की संगीत–गति का प्रयोग अपनी कविताओं में सहज रूप से किया है।
इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि महादेवी वर्मा के गीत और उनकी अभिव्यक्ति अब उनके व्यक्तित्व की पहचानबन गए हैं। "मैं नीर भरी दुख की बदली" एक ऐसा ही गीत है स्वयं महादेवी ने ही गीति को परिभाषित करते हुए लिखा है कि काव्य की ऊँची–ऊँची हिमालय–श्रेणियों के बीच में गीति–मुक्तक एक सजल–कोमल मेघखण्ड है, जो न उनसे दबकर टूटता है और बंधकर रूकता है। प्रत्युत हर किरण से रंग–स्नात होकर उन्नत चोटियों पर उड–उडकर उस विषालता के कोने में अपना स्पंदन पहुँचता है।"[6]
स्पष्ट है कि महादेवी की कविताएँ और उनमें विद्यमान उनका गीति–तत्व इन सारे नियमें का वहन करता है तभी तो आचार्य रामचन्द्र षुक्ल सरीखे आलोचक ने भी लिखा है –"गीत लिखने में जैसी सफलता महादेवी जी को हुई,वैसी और किसी की नहीं। न तो भाषा का स्निग्ध और प्रांजल–प्रवाह और कहीं मिलता है, न ह्रदय की ऐसी भाव–भंगिमा। जगह–जगह ऐसी ढली हुई और अनूठी व्यंजना से भरी पदावली मिलती है कि ह्रदय खिल उठता है।"[7]

सन्दर्भ

1. साभार, आधुनिक साहित्य चिन्तन, डॉ. हरीष अरोडा एवं डॉ. गुंजन कुमार झा, पृष्ठ 17–18
2. महादेवी वर्मा, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध, पृष्ठ 122
3. नन्ददुलारे वाजपेयी, आधुनिक साहित्य, पृष्ठ 24
4. महादेवी वर्मा, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध, पृष्ठ 127
5. महादेवी वर्मा, "भूमिका", रश्मि, पृष्ठ 4
6. महादेवी वर्मा, साहित्कार की आस्था तथा अन्य निबन्ध, पृष्ठ 130
7. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 389